# कहॉ गया वो बचपन, छिन गया वो बचपन

इक्कड़ बिक्कड़ बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरा सौ.....

पोसम्बा भाई पासेम्बा डाकिये ने क्या किया.....

ये वो शब्द है जो आजकल गली मौहल्लों में सुनने को नहीं मिलते हैं। इन शब्दों के साथ बच्चों का बचपन निकलता था और बच्चे इस तरह के सैकड़ों शब्दों के साथ अपना बचपन भरूपर जीते थे। आजकल ये शब्द सुनने को नहीं मिलते हैं। हमने विकास के साथ क्या पाया और क्या खोया कि अगर गणना करें तो बच्चों के हिस्से से हमने उनका बचपन छीन लिया है और उनके बचपन को हमने यांत्रिक बचपन बनाकर रख दिया है। याद करो वो दिन जब आप और हमारे जेसे बच्चे सुबह और शाम को अपने मौहल्ले में टोलियॉ बनाकर घूमा करते थे और दुनिया भर की चिंता से मुक्त होकर खुले आसमान में कभी गिल्ली डंडा खेला करते थे तो कभी किसी बाग में लुका छिपी का खेल खेलकर अपने साथियों को ढूॅढा करते थे। बचपन की वो यादें आज भी हमारे जेहन में ऐसे ताजा है कि उनको याद कर हम आज भी खुद को तरोताजा महसूस करते हैं।

एक समय था जब बचपन खेल खेल में निकल जाता था और बचपन का मतलब ही खेल खिलौनों से लगाया जाता था। हर गली मौहलले में बच्चों की टोलियॉ अलग अलग खेल खेला करते थे। कोई लुका छिपी खेलता तो कोई पकड़ा पकड़ी, गिल्ली डंडा का खेल तो बच्चों का सबसे प्रिय खेल हुआ करता था। इसी के साथ लंगड़ी खेलना, लौहे और लकड़ी का खेल खेलना, पेल दूज का खेल, धाड़ धुक्कड़ का खेल, गुड्डे गुड़िडयों की शादी करना आदि आदि बहुत से ऐसे खेल थे जिनके माध्यम से बच्चे खेल खेल में बड़े हो जाते और समाज की सामाजिकता को सीखते थे।

याद करो वो अपने शहर में बारिस का आना और वो कागज की कश्तियॉ बनाकर पानी में छोड़ना और उस कष्ती के पीछे पीछे जब तक जाना जब तक कि वह कष्ती दम न तोड़ दे । याद करो वो तेज ऑधियों में कागज से बनी पतंगों को उड़ाना और आनन्द लेना। कितना खुषगवार होता था वह सब । कितना शानदार और यादगार रहा है हमारा बचपन । पर आज के बच्चों के नसीब में यह बचपन नहीं है, उनके पास कम्प्यूटर है, टीवी है, विडियोगेम है और आधुनिक साजो सामान के बने यंत्र है खिलौने है पर नहीं है तो कष्ती वो पतंग और वो अल्हड़पन और वो बचपना।

वर्तमान परिदृष्य पर गौर फरमाए तो हमें पता चलता है कि हमने विकास की इस दौड़ में बच्चों से बचपन छिन लिया है और उनके सिर पर स्कूल के बैग का इतना बोझ डाल दिया है कि आजकल के बच्चों की अल्हड़ता और नाजुकता इन बस्तों को बोझ में दब कर रह गई है। आज किसी भी गली मोहल्ले में बच्चे आपको खेलते नजर नहीं आएंगे। आजकल का बच्चा टीवी के सामने सीरियल देखता है, कार्टून की फिल्म देखता है, टीवी फिल्म देखता है और गेम्स पीरियड में थोपा हुआ गेम खेलकर अपनी दिनचर्या पूरी करता है।

क्या यह स्थितियॉ बच्चों के लिए लाभदायक है। इस पर गंभीरता से चिंतन करने की आवष्यकता है। ?

पिछले दौर में गली मौहल्ले में खेलकर बच्चा साामाजिकता सीखता था आपस में मिलकर रहना, पड़ौसी से प्रेम, भाईचारा और समाज में रहने का तरीका सीखता था। वह खेल खेल में अपने पूरे मौहल्ले और पड़ौसी को जान जाता और वह बच्चा पूरे मौहल्ले का बच्चा माना जाता था। आज जो सामाजिक स्तर गिरा है और नैतिकता में जो कमी आई है और व्यक्ति ने स्व की कोटर में रहना सीखा है इसका मूल कारण एक यह भी है कि हमने बच्चों को उनके स्वाभाविक खेलों से दूर कर लिया। हमने उसको एकाकीपन से भरे खेल दिए जिन्हे खेलकर वह स्वयं एकाकी होता जा

जाता है उसे पता नहीं कि पड़ोस में कौनसा उसकी हमउम्र का बच्चा रहता है और उसको उससे दोस्ती करनी है। उसे यह तो पता है कि आज किस कार्टून चैनल पर कौनसा सीरियल आएगा और आईपीएल खेलों का कलेण्डर क्या है लेकिन वह यह नहीं जानता कि उसका मौहल्ला कितना बड़ा है और उसमें कौन कौन रहते हैं। कम्प्यूटर पर बैठकर दुनिया भर की खबर रखने के चक्कर में वह अपने पड़ौस से अनजान रह जाता है। जिन खेलों के माध्यम से पूरे समाज में उसका प्रवेष होना था वह द्वार अब उसके पास नही रहा है और यही कारण है कि मौहल्ले का होने वाला यह बच्चा अब शर्मा जी, वर्माजी, सक्सेनाजी का बच्चा होकर रह गया है।

खेल जीवन में अनुषासन तो सीखाते ही है साथ ही साथ खेलों के माध्यम से बच्चे के व्यक्तित्व का भी विकास होता है। लेकिन बंद कमरे में विडियोगेम पर खेले जाने वाले खेलों के माध्यम से आजकल के बच्चे ने अपने बचपन को खो दिया है और वह बच्चा बड़ा होकर अपने ही समाज में अकेला महसूस करता है।

आप इमानदारी से अपने आस पास के घर परिवार के माहौल पर नजर डाले और अपने आप के बचपन से अपने आज के बच्चे के बचपन की तुलना करें तो शायद जो बात में कहना चाह रहा हूँ वह अपने आप आपके समझ में आ जाएगी।

जरूरत है आज के बच्चे को स्व की कोटर से निकाल कर सामाज के उस पटल पर रखने की जहॉ समग्र समाज उसे अपना परिवार लगे और वह अपने बचपन से ही वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ बड़ा हो और एक जिम्मेदार नागरिक बने ।

किसी कवि की कही ये पंक्तियॉ के साथ मैं अपनी बात को विराम देना चाहॅगा : –

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो , भले छिन लो मुझसे मेरी जवानी,
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन वो कागज की कष्ती वो बारिस का पानी.....